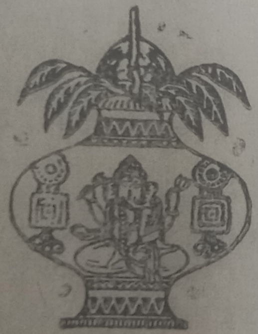

लक्ष्मी पूजन

卐

द्वारा

अरविन्द प्रकाशन
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर ३४२००१ (राज.)

卐

मूल्य १ रुपया

दो शब्द

धन की आराध्य देवी लक्ष्मी मानी गई है, जो कि समुद्र से उत्पन्न भगवान विष्णु की प्रियतमा है, इसकी आराधना और पूजन जीवन का शुभ प्रतीक है। दीपावली के अवसर पर तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी श्रद्धा से महालक्ष्मी का पूजन करता ही है, परन्तु इसके लिए विधान यह है, कि जब कभी मन में इच्छा उत्पन्न हो, जब भी मन में लक्ष्मी पूजन की भावना बलवती हो, तभी महालक्ष्मी पूजन किया जा सकता है, इसके लिए कोई मुहूर्त आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

यदि नित्य महालक्ष्मी पूजन-प्रातःकाल किया जाय, तो एक श्रेष्ठ उपलब्धि है, और कई साधकों को मैंने नित्य पूर्ण विधि विधान के साथ महालक्ष्मी पूजन करते देखा है।

प्रवेश

दीपावली के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर एक मिट्टी के पात्र में सिन्दूर और घी मिला कर लेप सा बनावे, और उससे अपने पूजा स्थान घर या दुकान की दीवारों पर 'पन्द्रहिया यंत्र' स्वस्तिक अथवा बीसा यन्त्र अंकित करे, साथ ही 'शुभ लाभ' 'श्री-महालक्ष्म्यै' 'श्री कुबेराय नमः' आदि मंगल वाक्य भी सिन्दूर घी के लेप से या कुंकुम से अंकित करने चाहिए।

इसके बाद घर के मुख्य द्वार पर आम या पीपल के पत्तों से तोरण द्वार बनाकर बांधना चाहिए, जल भरने के स्थान पर एक कलश मांज कर उसे जल से भरकर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित कर स्थापित कर देना चाहिये, तथा उस पर एक सकोरे या कटोरी में थोड़े से चावल, हल्दी की गांठ, आम के पत्ते, कमल गट्टे, कमल के पुष्प तथा दूर्वा रखनी चाहिए, गले में मौली या कलावा बांधना चाहिए।

रात्रि को महालक्ष्मी के पूजन से पहले निम्न वस्तुओं में से जो जो सम्भव हो, वे पहले से ही मंगाकर रख लेने चाहिए—

१. रोली, २. चावल, ३. नारियल, ४. चन्दन, ५. हल्दी, ६. धूप, ७. दीप, ८. कपूर, ९. नैवेद्य १०. फल, ११. पुष्प, १२. पान, १३. सुपारियां १४. मौली (कलावा) १५. दूर्वा, १६. पंच पल्लव, १७. दूध, १८ दही, १९. घृत, २० शहद, २१. शक्कर, २२ गुड़, २३. सरसों, २४. कमल गट्टा, २५, श्वेत वस्त्र, २६ लाल वस्त्र, २७. यज्ञोपवीत, २८. गंगाजल, २९, शुद्ध जल, ३०. कलश, ३१. खील बतासे, ३२. मेवा, ३३. चांदी का रुपया, ३४. आभूषण, ३५. सिन्दूर, ३६. रुई, ३७. आसन, ३८. कलम दवात, ३९. बही खाते, ४० गणेश, लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र आदि।

इसके बाद जिस स्थान पर लक्ष्मी का पूजन करना हो, उस स्थान को गोबर से लीप लेना चाहिये, यदि पक्का फर्श हो तो शुद्ध जल से उसे धो लेना चाहिए, फिर सामने लकड़ी का बाजोट रख कर उस पर लाल कपड़ा बिछाकर गणेश, लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र स्थापित कर देने चाहिए, लक्ष्मी पूजन के साथ साथ सिक्कों की पूजा करने का भी विधान है, अतः किसी थाली में स्वस्तिक बना कर उसमें वे सिक्के या रोकड़ रुपये अथवा गहने रख देने चाहिए, चौकी के समीप ही (व्यापारी हों तो) बहियें कलम दवात आदि भी रख देने चाहिए।

सबसे पहले बही खातों को खोल कर उसके पहले तीसरे या पांचवें पन्ने पर कुंकुम या केशर से स्वस्तिक बना कर उस पर रोली लगानी चाहिए, तथा उसके नीचे क्रमशः इन वाक्यों को लिखना चाहिए।

ॐ श्री गणेशाय नमः
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः
ॐ श्री कुबेराय नमः

फिर नीचे मिति वार आदि लिखकर स्वस्तिक की पूजा करनी चाहिए।

एक अलग बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर तांबे का कलश स्थापित करना चाहिए, कलश पर नारियल रखना चाहिए, फिर गणेश जी के सामने दीपक जला देना चाहिए, अगरबत्ती को भी जलाकर रख देनी चाहिये।

इसके बाद पूजन सामग्री एक थाली में सजाकर रख देनी चाहिए, फिर पूजनकर्ता धोती कुरता पहिन पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह कर अपनी पत्नी के साथ बैठे, पत्नी सुन्दर सुसज्जित वस्त्र गहने आदि पहिने, साथ ही पूरे परिवार को पूजन में भाग लेने के लिए बुलावे।

पत्नी दाहिने हाथ की तरफ बैठे, आसन कैसा भी हो सकता है, पूजन से पूर्व चोटी में गांठ लगा लेनी चाहिए—

गणपति आह्वान

सर्व प्रथम दोनों हाथ जोड़कर गणपति का आह्वान करे—

ॐ श्रीं गणपतये नमः ऋद्धि सिद्धि सहितं मम गृहे महागणपति आवाहनं समर्पयामि।

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णक

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक ।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजानन
द्वादशैतानि नामानि य पठेच्छृणुयदापि ॥

महालक्ष्मी आह्वान

तत्पश्चात भगवती लक्ष्मी का आह्वान करे—

कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मया मृत घटै रासिच्य मानो श्रियम् ॥
बिभ्राणा वर मब्ज युग्म मभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-लसितां वन्दे रविन्द-स्थिताम्॥

विनियोग

फिर हाथ में जल लेकर विनियोग करे—

ॐ अस्य श्री सिद्ध-लक्ष्मी मंत्रस्य, हिरण्यगर्भ ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्व क्लेश पीड़ा परिहारार्थं च सर्व दुःख दारिद्र्य निवारणार्थं सर्व कार्य सिद्धयर्थं च सिद्ध लक्ष्म्यै पूजनं विनियोग ।

न्यास

ॐ हिरण्यगर्भं ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि । श्रीं बीजाय नमः । लिंगे ह्रीं शक्तये नमः पादयो । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ । सर्व क्लेश पीड़ा परिहारार्थं सर्व दुख दारिद्र्य नाशनार्थं सर्वकार्य सिद्धयर्थं च श्री

सिद्धलक्ष्मी मंत्र जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास

ॐ देव्यै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ पद्मिन्यै नमः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ विष्णुपत्न्यै नमः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ वरदायै नमः अनामिकाभ्यां नमः । ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ सिद्ध लक्ष्म्यै नमः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे,—क्षेत्रे,—नगरे,—नाम संवत्सरे,—अयने —मासे, पक्षे,—पुण्यतिथौ,—वासरे,—सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु,—नाना,—गोत्रोत्पन्नोहं, देवता प्रीत्यर्थे यथाज्ञानं, यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये; तदङ्गत्वेन गणेश महालक्ष्मीपूजनं करिष्ये

दक्षिण हाथ में जल, गंधाक्षतपुष्प, सुपारी आदि मंगलद्रव्य लेकर उपर्युक्त प्रकारेण उच्चारण करके निर्माल्य पात्र में उसे छोड़ दें ।

इसके पश्चात् अपने सामने जल का पात्र भरकर रखे यह पात्र ताम्बे का या चांदी का हो सकता है, फिर वरुण ध्यान करके कलश का पूजन करे ।

वरुण ध्यान

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते

मकरस्थं पाशहस्तमभसां पतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ।।

वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि पूजयामि ।

कलश पूजन

कलश को जल से भरकर देव के दाहिनी ओर (अपने बांयी ओर) रखें और उसमें वरुण का आह्वान करे—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयन्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धराः ।
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।।

प्रसन्नो भव । वरदो भव । अनया पूजया वरुणा द्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम ।

प्रोक्षण

कलश के जल को पूजा पात्र में लेकर इस जल से समस्त पूजन सामग्री एवं देवताओं का प्रोक्षण करे, बायें

हाथ में कलश लेकर दाहिने हाथ में पुष्प से उस जल को समस्त पूजन सामग्री, चित्र, मूर्ति, दीपक एवं स्थान आदि पर छिड़के, छिड़कते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे । यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः । उशतीरिव मातरः । तस्मा अरंग-माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ।

इसके बाद इसी जल को अपने स्वयं के ऊपर; पत्नी पर, तथा वहां उपस्थित सभी परिवार के सदस्यों पर छिड़के, छिडकते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—

आत्मप्रोक्षण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपिवा ।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर शुचिः ।।

आसन शुद्धि

पूजन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व अपने आसन को शुद्ध करना आवश्यक माना गया है, इसके लिए अपने आसन के नीचे चन्दन या जल से त्रिकोण बनाकर उस पर गंध, अक्षत, पुष्प निम्न मन्त्र के द्वारा समर्पित करे—

ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

फिर इस त्रिकोण पर आसन बिछाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ॐ आधारशक्तये नमः
ॐ कूर्माशनाय नमः
ॐ अनंतासनाय नमः
ॐ विमलासनाय नमः
ॐ आत्मासनाय नमः

दिग्बन्ध।

किसी भी देवताओं के पूजन से पूर्व दिग्बन्ध आवश्यक माना गया है, दिग्बन्ध का तात्पर्य है, कि पूजन के समय राक्षस एवं अन्य भूत-प्रेत, पिशाच आदि का प्रभाव न पड़े, और न किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित हो, इसके लिए सभी दिशाओं को बांधने की क्रिया को दिग्बन्ध कहते हैं।

साधक अपने बायें हाथ में सरसों लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ दाहिने हाथ से वे सरसों दशों दिशाओं की तरफ फेंके।

दिग्बन्ध

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

भैरव

सभी प्रकार के विघ्नों को दूर करने के लिए तथा पूजन कार्य में रक्षा के लिए भैरव की स्थापना आवश्यक मानी गई है, अतः साधक को चाहिए, कि वह बांयी ओर छोटी सी चावल की ढ़ेरी बनाकर उस पर सुपारी रखे, और उस सुपारी में भैरव की भावना दे, उसके सामने गुड़ का भोग लगावे, और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥
ॐ भं भैरवाय नमः॥

दीपक

इसके बाद साधक को दीपक पूजन करना चाहिए, दीपक को प्रज्वलित करे, और गंध, अक्षत, पुष्प से उसकी पूजा निम्न मन्त्रों द्वारा करें।

अस्मिन्क्षेत्रे दीपनाथ निर्विघ्न सिद्धिहेतवे।
महालक्ष्मी—पूजार्थमनुज्ञां दीयतां मम॥
दीपो ज्योतिः परब्रह्मः दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोस्तु ते॥
भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्मसाक्षिह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिस्यात् तावत्वं सुस्थिरो भव॥

गणपति

इसके बाद साधक गणपति पूजन करे, अपने सामने

गणपति ध्यान के बाद मूर्ति या चित्र को जल से स्नान कराकर पोंछ कर चन्दन या केशर से तिलक करे, अक्षत पुष्प चढ़ावे, नेवैद्य का भोग लगावे, तथा अन्त में हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

विनायकं वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

श्री गुरु ध्यान

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं,
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्॥
श्रुतिशिरसिविभातं बोधमार्तण्डमूर्ति।
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरुं भावयामि॥

हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्
ध्यायेद्गुरुचन्द्रशिलाप्रकाशंचित्पुस्तकाभीष्टवरंदधानम्
श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः। ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः। ॐ स्वात्माराम पन्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवे नमः आवाहयामि पूजयामि।

फिर गुरु को पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि समर्पित कर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानान्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुगुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

गुरु पूजन के बाद साधक महालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करे, सर्वप्रथम महालक्ष्मी का दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करे, ध्यान से पूर्व अगरबत्ती लगा लें, तेल और घी का दीपक प्रज्ज्वलित कर दे, और शुद्ध मन से पूर्ण निष्ठा के साथ भगवती महालक्ष्मी का आह्वान करे।

मन्त्र

ॐ अम्बे अम्बिकेम्बालिके न मा नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः समर्पयामि।

आह्वान

ॐ सर्वलोकस्य जननी पद्महस्तां सुलोचनाम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रांहिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदोऽमआवह॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि।

आसन

तप्तकांचन वर्णाभा मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

पाद्य

अर्घ्य में जल लेकर निम्न मन्त्र से भगवती महालक्ष्मी को अर्घ्य प्रदान करें—

अर्घ्य

अष्टगंधसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः हस्तयोर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमन

सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णुशिवादिभिः ।
स्तुता ददाम्याच मन महालक्ष्म्यै मनोहरम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

स्नान

पंचामृतसमायुक्तं जाह्नवीसलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ।।

स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पंचामृत स्नान

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम् ।
पंचामृतं गृहाणेदं पंचास्यप्राणवल्लभे ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नान

ॐ गोरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । अष्टपदी बभूवुषी सहस्रजरा परमे व्योमन् ।।

परमानन्दबोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये ।
शुद्धोदकैस्तव स्नानं कल्पयाम्यम्ब शंकरि ।।

श्रीमातृ नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।
शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

वस्त्र

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमंत्वयरिति मनोहरम् ।
दीयमानं महादेवी गृहाण जगदम्बिके ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ।
आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुपर्क

महालक्ष्मी को एक कटोरी में घी और गुड़ मिलाकर मधुपर्क प्रदान करे ।

कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम् ।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि ।

आभूषण

रत्नं कङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नगमना सा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे ।।

गन्ध

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षत

अक्षतान् धवलान् देवि शालीकांस्तण्डुलान् शुभान् ।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृहाणाम्ब कृपानिधे ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्प

मन्दारपारिजाता दीन्पाटलं केतकी तथा ।
मेरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोस्तुते ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि ।

अंग पूजा

साधक अपने हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर प्रत्येक नाम उच्चारण करता हुआ महालक्ष्मी को अक्षत, पुष्प

समर्पित करता हुआ उनकी अंग पूजा करे—

ॐ लक्ष्म्यै नमः पादौ पूजयामि । ॐ गौर्यै नमः जंघे पूजयामि । ॐ पद्मायै नमःजानुनि पूजयामि ॐ जगद्धात्र्यै नमः उरु पूजयामि । ॐ जगत प्रतिष्ठायै नमः कटिं पूजयामि । ॐ देव्यै नमः उदरं पूजयामि । ॐ लोकवन्दितायै नमः स्तनौ पूजयामि । ॐ कल्याण्यै नमः कण्ठं पूजयामि । ॐ शान्तिरूपिण्यै नमः मुखं पूजयामि । ॐ भवान्यै नमः नेत्रे पूजयामि । ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः कर्णौ पूजयामि । ॐ शर्वाण्यै नमः ललाटं पूजयामि ।
ॐ मंगलदात्र्यै नमः शिरः पूजयामि ।

सौभाग्य द्रव्य

कज्जलं चैव सिन्दूरं हरिद्राकुंकुमानि च ।
भक्त्यार्पितानि श्रीमातः सौभाग्यानि च स्वीकुरु ।।

धूप

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः धूपं आघ्रापयामि ।

दीप

कर्पूरवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशंकरं दीपं गृहाण परमेश्वरी ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य

नैवेद्य गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरसमन्वितं लक्ष्मीं देवि नमोस्तु ते ।।

नैवेद्य प्रोक्षण— ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्व-शक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल

एलालवंगकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मुखशुद्धयर्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा

पूजापूर्णत्वसिद्धयर्थं पूर्णं पूर्णफलप्रदे ।
हेमरत्नमयीं द्रव्य दक्षिणां स्वीकुरुष्व मे ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः सांगता सिद्धयर्थं हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि ।

नीराजन

चतुर्दसर्वलोकानां तिमिरस्य निवारकम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः नीराजनं समर्पयामि ।

जल आरती

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष(गुं) शांतिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व(गुं) शान्ति शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्ति रेधि ।

प्रदक्षिणा

सर्वमंगललाभाय सर्वपापनिवृत्तये ।
प्रदक्षिणां करोम्यम्ब प्रसीद परमेश्वरि ।।
नमस्ते सर्व देवानां वरदासि हरिः प्रिये ।
या गतिस्त्वप्रपन्नाभां सा मे भूयात्व नर्पनात् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पांजली

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय, महाराजाय नमः ।

पुष्पांजलिं गृहाणेमां वरब्रह्मस्वरूपिणि ।
भक्त्या समर्पितं देवि प्रसन्नो भव सर्वदा ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ।

नमस्कार

केतकी जातिकुसुमैर्मल्लिका मालतीभिंव: ।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता तावत्प्राप्त्यै नमोस्तुते ।।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः नमस्करोमि ।

क्षमापन

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेर्हनिशं मया ।
दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।
सापराधोस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकंप्योहं यथेच्छसि तथा कुरु ।।

अज्ञानाद विस्मृतेर भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।

विशेषार्घ्य

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्यां प्रसीद परमेश्वरि ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

अनेन कृतेन पूजा साधना कर्मणा श्री महालक्ष्म्यै प्रीयन्ताम् ।

इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान के साथ महालक्ष्मी का पूजन करे, तत्पश्चात महालक्ष्मी को जो भोग लगाया हुआ है, वह प्रसाद परिजनों को वितरित करे ।

दीपावली की रात्रि को कई स्थानों पर महालक्ष्मी

पूजन के उपरान्त तराजू पूजन, बही पूजन, मसीपात्र पूजन, लेखनी पूजन आदि का भी विधान है, अतः यदि साधक चाहे तो उसके बाद इन सबकी भी पूजा करे ।

पूजन के बाद साधक परिवार वालों के साथ भोजन करे, पर लक्ष्मी के सामने दोनों दीपक बराबर लगते रहें तथा पूजन सामग्री एवं पूजन उपयोगी द्रव्य वहां से नहीं हटावे ।

दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय के समय पुनः संक्षिप्त महालक्ष्मी का पूजन करे, और उसके बाद ही महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को अपने स्थान पर स्थापित करे, श्री यन्त्र आदि को भी यथास्थान स्थापित किया जा सकता है, मसीपात्र, तराजू, बही आदि को भी अपने स्थान पर ले जाकर रखा जा सकता है ।

राजस्थान में कई स्थानों पर लक्ष्मी पूजन के समय सौभाग्यवती स्त्रियां अपना मंगलसूत्र या अन्य स्वर्ण आभूषणों की भी पूजा करती हैं, अतः रात्रि को यदि आभूषण पूजा हुई हो तो प्रातःकाल इन आभूषणों को धारण कर लेना चाहिए ।

लक्ष्मी पूजन के समय कई स्थानों पर चांदी के रुपयों आदि की पूजा करते हैं, इन रुपयों को अपने सन्दूक या तिजोरी में रख दें, उन्हें व्यय न करें ।

इस प्रकार विधि-विधान पूर्वक महालक्ष्मी पूजन से निश्चय ही धन-धान्य वृद्धि एवं मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है ।

रीप्रिंट मंगाइये

- ये उपयोगी लेख छोटी छोटी पुस्तिकाओं में नाम मात्र के
पर प्राप्य है।

- आप इन पुस्तिकाओं को अपने मित्रों सम्बन्धियों एवं परि
में बांट कर उनकी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

- आप चाहे तो अपने समुदाय में किसी लेख विशेष की प्र
बांट सकते हैं।

- स्कूल या कालेजों में विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण
बाँटकर श्रेय भागी बन सकते हैं।

- अस्पताल के रोगियों में कोई विशेष लेख बांटकर उनकी बी
यत दूर करने में सहायक हो सकते है।

नये नियम

- आप अपना आर्डर सादे कागज पर लिख कर लिफाफे में डाल
हमें भेज दें, इस बात का ध्यान रखें, कि आपका नाम व पू
पता स्पष्ट शब्दों में लिखा हो।

आपका आदेश किसी भी री प्रिंट की एक प्रति या एक से अधि
प्रतियों का हो सकता है, हर री प्रिंट के सामने मनोवांछि
प्रतियों की संख्या स्पष्ट लिखें।

पचास से अधिक रीप्रिंट मंगाने वाली स्कूलों, कालेजों या समाज सेवकों को पचीस प्रतिशत का कमीशन दिया जायगा।

जितने भी रिप्रिंट मंगाना चाहें, उतने मूल्य के डाक टिकट पत्र के साथ लिफाफे में डालकर भेज दें।

सौ से अधिक रिप्रिंटों का मूल्य 'अरविन्द प्रकाशन' के नाम से बैंक ड्राफ्ट, पोस्टलआर्डर या मनिआर्डर से भेज सकते हैं, मनियार्डर भेजने की स्थिति में उसकी मूल रसीद भी आर्डर के साथ नत्थी करके भेज दें।

आप चाहें तो रिप्रिंट सीधे ही अपने मित्र या सम्बन्धी को भिजवा सकते हैं, इसके लिए सम्बन्धी या मित्र का नाम व पूरा पता हमें लिख भेजें, साथ में तीस पैसे के डाक टिकट भी अतिरिक्त भेजें।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—

अरविन्द प्रकाशन
श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०

निम्न लेखों के रीप्रिंट उपलब्ध हैं -

❀	**राम चरित मानस : मंत्र सिद्धि** प्रति रीप्रिंट	५० पैसे
❀	**आरती संग्रह**	”
❀	**आबू पर्वत पर पाई जाने वाली जड़ी बूटियां**	”
❀	**लक्ष्मी-पूजन**	१ रुपया
❀	**अचरज भरा अद्भुत सिद्धिप्रद : श्री यंत्र**	५० पैसे
❀	**वे साबर मंत्र जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये**	”
❀	**परलोक जीवन के यथार्थ अनुभव**	”
❀	**समस्या पेट की : उपचार आयुर्वेद का**	”